शाखी द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'पथिक' काव्य खण्ड
कवि-राम नरेश त्रिपाठी Date _____ Page _____

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- 'प्रकृति' से मानव का कथा सम्बन्ध है?

उत्तर:- प्रकृति से मानव का अभिन्न और चिरन्तन सम्बन्ध रहा है। साहित्य मानव की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। अतः प्रकृति भी उसी मात्रा में अभिव्यक्ति पाती है, जिस मात्रा में उसका मानव से संबंध रहता है। वह सत्य प्रेरणाओं के मामले में चेतनशील समाज से कभी पीछे नहीं है। इससे से यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

प्रश्न:- आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण कवि किस प्रकार किया है?

उत्तर: आलम्बन रूप में प्रकृति साध्य होती है। इसकी स्वतंत्र सत्ता होती है। आलम्बन के रूप में ही कवि उसका वर्णन करता है। 'पथिक' काव्य में कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का आलम्बन रूप में वर्णन किया है।

प्रभात, चाँदनी रात, समुद्र तट पर वन इत्यादि के वर्णन में कवि एक संवेदनशील दर्शक की भाँति प्रकृति के इन भिन्न-भिन्न रूपों को देखता है। वह जो देखता है, उसका चित्र एक सफल चित्रकार की भाँति शब्द और अर्थ के सहारे अपने काव्य में उतार देने का चेष्टा करता है। इस कला में कवि रामनरेश त्रिपाठी को अशातीत सफलता मिली है। यही कारण है कि कवि द्वारा 'पथिक' में प्रकृति का आलम्बन रूप का वर्णन बहुत सुन्दर हुआ है।

प्रश्न:- 'पृष्ठभूमि' के रूप में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार किया है?

उत्तर:- पृष्ठभूमि का अर्थ है 'भूमिका'। किसी बात को नये ढंग से शुरु कर उसे प्रभावशाली रूप में रखने के लिए भूमिका की आवश्यकता पड़ती है। इसमें एक रमणीय वातावरण की त्वरित अवतारणा हो जाती है। 'पथिक' के पहले, दूसरे, तीसरे एवं पाँचवें सर्गों में इसी प्रकार की काव्य-भूमिकाओं का वर्णन किया गया है।

शेष आगे-

4. प्रश्न:- पुत्र को 'छौना' कहने में क्या भाव छुपा है, उसे उद्घाटित करें।

उत्तर:- 'छौना' का अर्थ होता है हिरण आदि पशुओं का बच्चा। 'पुत्र-वियोग' शीर्षक कविता में कवयित्री ने 'छौना' शब्द का प्रयोग अपने बेटा के लिए किया है। हिरण या बाघ का बच्चा बड़ा भोला तथा सुन्दर दीखता है। इसके अतिरिक्त चंचल तथा तेज भी होता है। अतः कवयित्री द्वारा अपने बेटा को छौना कहने के पीछे यह विशेष अर्थ भी हो सकता है।

5. प्रश्न:- माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों?

उत्तर:- माँ के लिए अपने मन को समझाना तब कठिन हो जाता है, जब वह अपना बेटा खो देती है। बेटा माँ की अमूल्य धरोहर होता है। माँ की आँखों का तारा होता है। यदि क्रूर नियति द्वारा माँ से उसके बेटे को छीन लिया जाता है तो माँ के लिए अपने मन को समझाना कठिन हो जाता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 07/9/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

दिगंत - भाग-2 शीर्षक - पुत्र-वियोग
काव्य खण्ड
कवयित्री - सुभद्राकुमारी चौहान
उपशास्त्री - राष्ट्रभाषा हिन्दी

लघु - उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. प्रश्न :- कवयित्री का खिलौना क्या है?

उत्तर :- कवयित्री का खिलौना उसका बेटा है। बच्चों को खिलौना प्रिय होता है, वह उनकी सर्वोत्तम प्रिय वस्तु होती है। उसी प्रकार कवयित्री के लिए उसका बेटा उसके जीवन का सर्वोत्तम उपहार है। इसलिए वह कवयित्री का खिलौना है।

2. प्रश्न :- कवयित्री स्वयं को असहाय तथा विवश क्यों कहती है?

उत्तर :- कवयित्री स्वंय को असहाय तथा विवश इसलिए कहती है कि उसने अपने बेटे की देखभाल तथा उसके लालन-पालन पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर दिया है। स्वयं अपनी सुविधा असुविधा का विचार नहीं किया। बेटा को ठंड न लग जाए, बीमार न पड़ जाए इसके लिए सदैव गोदी में रखा। इन सारी सावधानियों तथा मंदिर में पूजा अर्चना से भी वह अपने बेटे की असमय मृत्यु से नहीं बचा सकी। नियति के आगे किसी का वश नहीं चलता। अतः वह स्वयं को असहाय एवं बेवश कहती है।

3. प्रश्न :- पुत्र के लिए माँ क्या-क्या करती है?

उत्तर :- पुत्र के लिए माँ निजी सुख-दुख भूल जाती है। उसे अपनी सुख-सुविधा के विषय में सोचने का अवकाश ही नहीं रहता है। वह उसके स्वास्थ्य और सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान रखती है। बेटा को ठंड न लग जाए, इसके लिए सदैव उसे गोद में लेकर उसका मनोरंजन करती है। उसके लिए मंदिरों में जाकर पूजा अर्चना करती है। उसे लोरी-गीत सुनाकर सुलाती है।

शेष आगे -

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

जयद्रथ- वध

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

हा ! बन्धुओं के ही करों से बन्धु-गण मारे गये !
हा ! तात से सुत, शिष्य से गुरु स-हठ संहारे गये ।
इच्छा- रहित भी वीर पाण्डव रत हुए रण में अहो !
कर्तव्य के वश विज्ञ जन क्या- क्या नहीं करते कहो ?

भावार्थ:- कवि मैथिलीशरण गुप्त महाभारत के युद्ध में योद्धाओं के आपसी सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि इस युद्ध में भाइयों का वध भाइयों के हाथ से हुआ क्योंकि दोनों ही परस्पर विरुद्ध पक्षों की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुए। पिता के द्वारा पुत्र का वध हुआ। दुर्धर्मिता के कारण गुरु द्रोणाचार्य कौरवों की ओर लड़े उनका भी वध उनके ही शिष्य अर्जुन के हाथों से हुआ। वीर पाण्डवों को इस प्रकार का भयंकर युद्ध करने की तनिक भी इच्छा नहीं थी, किन्तु अनेकों कौरवों की दुर्धर्मिता के कारण युद्ध लड़ना पड़ा। कभी-कभी विद्वानों को भी कर्तव्य के वशीभूत होकर क्या-क्या नहीं करना पड़ता है। जिन बातों को वह स्वयं अच्छा नहीं समझते उन कार्यों को भी परिस्थितिवश करने के लिए उनको बाध्य होना पड़ता है।

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि का कहना है कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। इस युद्ध में परिवार के सदस्य ~~से~~ आपस में युद्ध कर अपना ही सर्वनाश किया है। अतः ऐसी स्थितियों से बचना चाहिए।

डॉ० देव चरण प्रसाद 09/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

Date: _____ Page: _____

प्रथम सर्ग में प्रभात सौन्दर्य की अवतारणा है, तो दूसरे में मध्य रात्रि की चाँदनी में घुले वातावरण का दृश्य है यथा-

मध्य निशा निर्मल निरभ्र नभ दिशा विराम - विहाना ।
विलसित था अम्बर के ऊपर अद्भुत एक नगीना ॥

डॉ० देव चरण प्रसाद 09/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० मध्य वि० सुखसेना, पूर्णियाँ